3. नई शिक्षा नीति 2020, मूल्य शिक्षा के संदर्भ में प्राचीन भारतीय दर्शन की भूमिका

नीतू जैन
सहायक प्रोफ़ेसर, महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय, झज्जर

पिछले दशक और विशेष रूप से कोविड–19 महामारी के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था का राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य ऐसा रहा है कि भारत फिर से एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने की आवश्यकता को महसूस कर रहा है। दुनिया में सबसे युवा राष्ट्र होने के नाते भारत में रोजगार पैदा करने की अपार क्षमता है। इस बात का इतिहास गवाह है कि किसी भी क्रांति, विकास और नवाचार के उद्देश्यों को सार्थक करने में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज हम विरोधाभास की दुनिया में जी रहे हैं। जीवन मूल्यों के अभाव में मानव व्यवहार शून्य होता जा रहा है और शिक्षा दिशाहीन। इसीलिए शिक्षा व्यवस्था मे सुधार के लिए नई शिक्षा नीति– 2020 पेश की गई है, जिसका मुख्य उद्देश्य है, शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्य शिक्षा की शुरुआत करना है। प्रस्तुत लेख प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित शिक्षकों और जीवन मूल्यों का वर्तमान की युवा पीढी मे मानवीय मूल्यों को पैदा करने से संबंधित विश्लेषण पर आधारित है।

आज हम जिस समाज और संस्कृति में जीवन जी रहे है, वो एक बड़े स्तर के तकनीकी परिवर्तन के बाद का है। एक ओर जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे है, वहीं दूसरी ओर जीवन मूल्यों में तेजी से गिरावट आ रही है। समाज का अधिकांश हिस्सा भ्रष्टाचार, अहंकार, बेरोजगारी, तनाव, अपराध, नशीली दवाओं की गिरफ्त में आ गया है। फैलती सामाजिक बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने का एक ही रास्ता है वो है, प्रारंभ से प्रारंभ करना। नई शिक्षा नीति –2020, इसी दिशा में एक कदम है। इस नीति के द्वारा देश की चरमराती सामाजिक, आर्थिक अर्थव्यवस्था को सुधारा और संतुलित किया जा सकता है। राष्ट्र निर्माण में नई शिक्षा–2020, एक मील का पत्थर साबित होगी।

यह शिक्षा नीति सभी स्तरों पर मूल्य शिक्षा की शुरुआत पर विशेष बल देती है। युवाओं में भारतीय मूल्यों को विकसित करने के लिये शिक्षकों की भूमिका पर विशेष बल दिया गया है और यही बल प्राचीन भारतीय साहित्य में भी मिलता है। यहाँ पर उन्हीं कुछ पहलुओं को उजागर और विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। जिन जीवन मूल्यों को भारतीय साहित्य में विशेष महत्त्व दिया जाता था, वर्तमान में नई शिक्षा नीति भी उन्हीं बिंदुओं पर बल देती दिखाई दे रही है, जिन जीवन मूल्यों को हमने तरक्की की राह में बहुत पीछे छोड़ दिया, एक बार फिर हमें साहित्य की ओर लौटना होगा। अर्थात् छूट गए जीवन मूल्यों को पुन जीवन का हिस्सा बनाना होगा। भारत जीवन मूल्यों की जन्मभूमि है हमारी विरासत इतनी समृद्ध थी जब 1811 में भारत में 7,32,000 गुरुकुल थे। उस समय इंग्लैंड में पहला स्कूल खोला गया था। जड़ें आज भी वही है, बस जरूरत है उन जड़ों को पोषित करने की। भारतीय साहित्य का अवलोकन करने पर पता चलता है कि प्राचीन काल से भारतीय शिक्षा में जीवन मूल्यों और शिक्षक की भूमिका पर विशेष बल दिया गया है। भारतीय संस्कृति की हमेशा से ही समृद्ध विरासत रही है। इस लेख में इतिहास के गर्भ से वर्तमान में उपयुक्त और सार्थक सिद्ध होने वाले श्लोकों को उठा कर उन्हें नई शिक्षा नीति के साथ एकीकृत करने का प्रयास किया जा रहा है, जिन्हें गीता, आयुर्वेद, उपनिषद, वेद, चरक और सांख्य जैसे भारतीय शास्त्रों से लिया गया है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र पड़ना, लिखना, बोलना सीखना नहीं है, अपितु इसका वास्तविक अर्थ है सर्वांगीण विकास अर्थात् व्यक्तित्व निखारना, व्यक्ति को सभ्य और शालीन बनाना। हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के विकास पर विशेष बल दिया गया है। लेकिन इस उद्देश्य को मात्र कह सुन बताकर प्राप्त नहीं किया जा सकता। शिक्षा व्यक्ति को समझदार बनाती है उसके ज्ञान चक्षु खोलने का कार्य करती है। साथ ही व्यापक मानसिकता उसके सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, भावनात्मक पक्ष को भी मजबूत बनाती है। शिक्षा मानव को जानवर से इंसान बनाती हैं, उसे तर्किक और विचारशील बनाती है। व्यवहार में करुणा, सहानुभूति, परानुभूति, लचीलापन लाती है। नई शिक्षा, नीति –2020 के कुछ महत्वपूर्ण पहलू जिनसे मूल्य शिक्षा के बारे में पता चलता है।

- नैतिक, संवैधानिक और मानवीय मूल्य जैसे सहानुभूति, दूसरों के प्रति सम्मान की भावना, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, समानता और न्याय।
- जीवन कौशलः संचार, सहयोग, समूह कार्य, लचीलापन और विशिष्ट विकासशील भावनात्मक और प्रतिकूलता लब्धि।
- शिक्षक और संकाय, शिक्षण प्रक्रिया के केंद्र के रूप में उनकी भर्ती, निरंतर व्यावसायिक विकास, सकारात्मक विचार, और कार्य क्षेत्र का वातावरण महत्वपूर्ण है। नई

शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित 'मूल्य शिक्षा' प्राचीन भारतीय साहित्य में निहित मूल्य शिक्षा का ही क्रियान्वयन है। सी बी गुड के अनुसार, "मूल्य शिक्षा उन सभी प्रक्रियाओं का समुच्चय है जिसके द्वारा एक व्यक्ति जिस समाज में रहता है उसमें सकारात्मक मूल्यों की योग्यता, अभिवृति और व्यवहार के अन्य रूपों का विकास करता है"।।

प्रत्येक छात्र के सर्वांगीण विकास के लिये शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों को साथ लेकर चलना होगा। शिक्षकों के साथ माता–पिता को भी संवेदनशील बनाना होगा, ताकि उनकी अद्वितीय क्षमताओं को पहचाना जा सके और प्रोत्साहित किया जा, तभी शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक, आध्यात्मिक विकास हो सकेगा।

संक्षेप में कह सकते हैं कि छात्रों का बहुमुखी विकास, उन्हें स्वतंत्र रूप से सभी परिस्थितियों को संभाल के योग्य बनाता है। अंततः शिक्षा का मुख्य लक्ष्य तो हमेशा ही छात्रों को जीवन के रास्तों के लिए तैयार करना।

6– 'I' माडल समग्र विकास अवधारणा पर आधारित है।

यहाँ पर प्राचीन भारतीय दर्शन में उपलब्ध उन श्लोकों को वर्णित किया गया जो दर्शाते हैं कि प्राचीन भारत में भी मूल्य शिक्षा का विशेष महत्त्व था। प्राचीन काल में अध्यापक की भूमिका, शिक्षक और शिक्षा प्रणाली को न केवल रीड़ की हड्डी माना जाता था, अपितु संपूर्ण शिक्षण प्रणाली प्रक्रिया के लिए प्राण ऊर्जा माना जाता था।

अध्यापन कार्य को एक आध्यात्मिक प्रक्रिया माना जाता था जहाँ मस्तिष्क से मस्तिष्क का संबंध बनाया जाता था। भारतीय दर्शन में गुरु को सर्वोच्च इकाई माना जाता रहा है, जो जीवन को आकार देता है, जैसा कि नीचे दिए गए श्लोक में भी दर्शाया गया है। ध्यान की जड़ गुरु का रूप है। पूजा की जड़ गुरु के चरण है। मंत्र की जड़ गुरु का वचन है। मुक्ति का मूल गुरु की कृपा है अर्थात गुरु ही ध्यान, पूजा, मंत्र, वचन और यहाँ तक की मुक्ति भी गुरु हहै है।

ध्यानमूलं गुरुर्मूर्तिः पूजामूलं गुरुर्पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरुर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरूर्कृपा ॥

नई शिक्षा, नीति–2020 के अनुसार यदि छात्रों में जीवन मूल्यों को आत्मसात करवाना है तो शिक्षकों को व्यापक भूमिका निभानी होगी। उन्हें अपने जीवन में उसी आचरण का अनुसरण करना होगा जिसे विद्यार्थियों के जीवन में आत्मसात करवाना चाहते हैं जिसमें शिक्षक ईमानदार, सहयोगी, सहानुभूति रखनेवाला, समानता, ज्ञानी, उत्साही वैज्ञानिक दृष्टिकोण और कथनी और करनी में समानता वाले लक्षणों से युक्त व्यक्तित्व माना गया है। शास्त्रों में कहा भी गया है– सज्जन व्यक्तियों का जैसा मन होता है, वैसे ही वचन होते हैं और उन्हीं के अनुरूप ही क्रम होते हैं। अर्थात मन, वचन और कार्य? तीनों में एकरूपता होती है।

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता॥

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मे शिष्य और अध्यापक के बीच की अंतक्रिया विशेष महत्त्व रखती है। जिसका जिक्र न केवल प्राचीन साहित्य में हुआ है, अपितु नई शिक्षा नीति में भी किया गया है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बिना उत्साह और जिज्ञासा के करना नामुमकिन है। बुद्धिमान ज्ञान प्राप्त करना चाहता है चाहे ज्ञान बच्चे से क्यों न मिले, ठीक उसी तरह जैसे दीपक उस वस्तु को प्रकाशित नहीं करता जिसे सूर्य प्रकाशित नहीं कर सकता।।

युक्ति युक्तं प्रगृह्णीयात् बालादपि विच
रवेरविषयं वस्तु किं न दीपः प्रकाशयते॥

नई शिक्षा नीति में भी शिक्षक को मौलिक सुधारों के मूल केंद्र के रूप में रखा गया है। नई शिक्षा नीति के अनुसार छात्रों को वैश्विक स्तर पर तैयार करने के लिए आज के अध्यापक को अपने अध्यापन कार्य में समय की मांग को देखते हुए तकनीक के साथ जुडकर मिश्रित शिक्षा शैली से पढ़ाना होग। नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षक और छात्र–दोनों इस प्रकार एक संवादात्मक प्रक्रिया के रूप में पढ़ते और पढाते हैं जिससे वे सीखते और सिखाते हैं और आगे बढ़ते हैं, ठीक उसी तरह जैसे कि हमारे भारतीय दर्शन में उल्लेखनीय हैं।

नई शिक्षा नीति में शिक्षकों को छात्रों के लिये सलाहकार माना गया है। इसके लिए शिक्षक को एक अच्छा श्रोता, गर्मजोशी, निष्पक्ष रवैया होना चाहिये। या यूं कहें कि शिक्षक इस बात से भली–भाँति परिचित हो की जो वो भूमिका निभा रहा है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। उसमें एक समझदार प्रशिक्षित की तरह बालकों के विकास और परिवर्तन में योगदान देना होगा। उन्हें सकारात्मक रवैया अपनाना है। एक जुगनू का काम करना है और जीवन मूल्यों रूपी बीच को उस आशा के साथ बोना होगा कि यह न्यायपूर्ण और नए समाज की दिशा में कदम हो।

प्राचीन भारत की समृद्धि ज्ञान की विरासत इस नई शिक्षा नीति– 2020 के लिये एक मार्गदर्शन साबित होगी। प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं था, बल्कि इस संसार में जीवन जीने की कला सीखना था। स्वयं की पूर्ण प्राप्ति और मुक्ति का मार्ग सीखना था। विश्व प्रसिद्ध, बहुविषयक शिक्षण और अनुसंधान केंद्र जैसे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी भारत के ही हैं जिन्होंने न केवल उच्चतम मानकों को स्थापित किया, बल्कि देश, दुनिया और पृष्ठभूमि से परे छात्रों और अनुसंधानकर्ताओं की मेजबानी की। भारतीय शिक्षा प्रणाली चरक और सुश्रुत, आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, चाणक्य, माधव, पतंजलि, पाणिनी और तिरुवल्लुवर जैसे कई विद्वानों की जन्मभूमि है। प्राचीन भारतीय ज्ञान की झलक हमें यहाँ से मिल जाती है–

सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम।
सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम॥

आराम पसंद के लिए कहीं ज्ञान नहीं है और जिज्ञासु के लिए कहीं आराम नहीं है। विद्यार्थी जीवन त्याग का जीवन है।

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।

विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धाः किंशुका यथा॥ ०३–०८

रूप और यौवन से संपन्न, उच्च कुल में पैदा होकर भी विद्या हीन मनुष्य सुगंध हीन फूल के समान है, जो कहीं भी शोभा नहीं पाता।

संतोषस्त्रिषु कर्तव्यः स्वदारे भोजने धने।

त्रिषु चौव न कर्तव्योऽध्ययने जपदानयोः॥ ०७–०४

एक व्यक्ति को अपनी पत्नी, भोजन, और धन से संतुष्ट होना चाहिए, परंतु अपने ज्ञान, विद्या, दान और जप से कभी नहीं

यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चौव लज्जति ।

तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम् ॥

कर्म के बारे में बताते हुए कहा गया है ऐसा कार्य, जो करने से पहले, करते हुए या करने के बाद, आत्मग्लानि हो, या शर्म आए। ऐसे सभी कार्य तामसिक माने गए हैं अर्थात् नहीं करने चाहिए।

हमारी समृद्ध विरासत को न केवल सहेजकर रखने की जरूरत है, बल्कि इसे पोषित, संरक्षित किया जाना चाहिए

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नई शिक्षा–नीति में निहित उद्देश्यों को प्राचीन भारतीय दर्शन के सिद्धांतों से लाभ उठाकर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। भारतीय लोकाचार में छिपे हुए खजाने को भलीभाँति समझकर उसके द्वारा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में रोशनी की जा सकती है। ये कलयुग के अंधकार में उस उजाले की भांति है जो शिक्षा प्रणाली से जुड़े सभी हितधारों के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी। जरूरत है सिर्फ अपनी जड़ों को पकड़ने की, वापस अपनी विरासत की ओर लौटने की, और उसे वर्तमान में समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की।